P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में भारत का योगदान

उर्वशी चौधरी
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान

सारांश

वर्तमान विश्व में कोई भी राष्ट्र "एकला चलो" की नीति का पालन नहीं कर सकता। वैश्वीकरण के इस युग में किसी भी देश की प्रगति व सुरक्षा उसके अन्य राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों से भी प्रभावित होती है। भारत की उन्नति भी कुछ सीमा तक उसकी विदेश नीति व अन्य राष्ट्रों के साथ रिश्तों से प्रभावित होती है। अफगानिस्तान भारत का एक पड़ोसी राष्ट्र है। भारत अफगानिस्तान की पुनर्निर्माण प्रक्रिया का एक सहायता कर्ता राष्ट्र है। एक स्थिर शांत, लोकतांत्रिक व आर्थिक दृष्टि से प्रगतिशील अफगानिस्तान ही भारत के सामरिक हितों के अनुकूल है। इस दृष्टि से भारत अफगानिस्तान में महत्त्वपूर्ण विकास साझेदारी निभाने की प्रक्रिया को अपना चुका है। अफगानिस्तान की वस्तुस्थिति को ध्यान में रखते हुए भारत ने अफगानिस्तान में राजनीतिक व सैन्य क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से सक्रिय भूमिका ना निभा कर अफगानिस्तान के आर्थिक व सामाजिक पुनर्निर्माण तक ही स्वयं को सीमित रखा है। अफगानिस्तान में पाकिस्तान, चीन व अन्य कट्टरवादी शक्तियों द्वारा भारत के विरोध के बावजूद भारत को अफगानिस्तान के सुदृढ़ीकरण हेतु निरन्तर सहायता की नीति को लागू रखना चाहिए।

मुख्य शब्द : प्रजातंत्र, आतंकवाद, तालिबान, वैश्वीकरण, NATO, ISAF, ANSF, पुनर्निर्माण, रेशम मार्ग, संसद, सामरिक।

प्रस्तावना

वर्तमान विश्व परिदृश्य में कोई भी राष्ट्र "एकला चालो" की नीति का पालन नहीं कर सकता। अन्य राष्ट्रों के साथ विभिन्न प्रकार के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सम्बन्ध कायम करना आज की आवश्यकता ही नहीं अपितु अपरिहार्यता है। वैश्वीकरण के इस युग में किसी भी देश की प्रगति व सुरक्षा उसके अन्य राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों से भी प्रभावित होती है। अतः प्रत्येक देश अपने विदेश सम्बन्धों का संचालन बहुत सोच–समझ कर करता है।

भारत विश्व की उभरती हुई शक्तियों में से एक प्रमुख राष्ट्र है जो निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। भारत की उन्नति भी कुछ सीमा तक उसकी विदेश नीति व अन्य राष्ट्रों के साथ रिश्तों से भी प्रभावित होती है। भारत ने सदैव ही अन्य राष्ट्रों के साथ शांति, स्वतंत्रता, समानता, न्यायपूर्ण पारस्परिक सहयोग आदि सिद्धांतों पर आधारित विदेश नीति का अनुसरण किया है। वैश्विक परिदृश्य में भारत की बढ़ती भूमिका उसके समक्ष निरन्तर नई चुनौतियां पेश कर रही है। लेकिन भारत इन चुनौतियों के समक्ष स्वयं को सक्षम बनाने की राह में अनवरत प्रयत्नशील है। भारत के लिए विश्व शक्ति बनने के अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ने हेतु स्वयं के लिए पहले दक्षिणी एशिया के अपने पड़ोसी राष्ट्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों की स्थापना और दक्षिण एशिया में शांत व सुरक्षित माहौल का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। भारत दक्षिण एशिया में एक प्रभावशाली शक्ति की भूमिका निभाने की दिशा में अनवरत तत्पर व अग्रसर है। वह अपने पड़ोसी राष्ट्रों के प्रति विदेशी सम्बन्धों को 'राजनीति' व 'शक्ति' के विचारों की अपेक्षा 'मित्रता' व सहयोग के आधार पर संचालित करने की इच्छा रखता है।

अफगानिस्तान दक्षिण एशिया व मध्य एशिया में स्थित भारत का एक पड़ोसी राष्ट्र है। लगभग 2000 से अधिक वर्षों के लिए इस क्षेत्र के प्राचीन मार्गों को सामूहिक रूप से 'रेशम मार्ग' (The silk road) के नाम से जाना जाता था। अफगानिस्तान के द्वारा पूर्व और पश्चिम में सम्पर्क स्थापित करने के कारण व अपनी विशेष सामरिक स्थिति के कारण यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थिति रखता है। अफगानिस्तान ने आंतरिक संघर्ष, विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप, कट्टरवादी इस्लामिक तालिबानी शासन आदि के कारण लम्बे समय तक बुरा दौर देखा है। लेकिन वर्तमान में यह अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए भी एक सुनहरे भविष्य के निर्माण की दिशा में प्रयत्नशील है। विश्व के विभिन्न राष्ट्रों द्वारा भी अनेक कारणों से प्रेरित होकर अफगानिस्तान के इस लक्ष्य की प्राप्ति में निरंतर

सहयोग प्रदान किया जा रहा है। भारत भी अफगानिस्तान की पुनर्निर्माण की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण सहायता कर्ता राष्ट्र है।

साहित्यावलोकन

अरूण सहगल (2011) ने अपनी पुस्तक 'अफगानिस्तान – ए रोल फोर इण्डिया' में अफगानिस्तान के समकालीन हालातों एवं पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में भारत की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए अफगानिस्तान के जटिल हालातों में भारत के हितों और प्राथमिकताओं को उजागर किया है।

मेरिएट डिसूजा (2007) ने पुस्तक 'इण्डियाज ऐड टू अफगानिस्तान – चैलेन्जेज एण्ड प्रोस्पैक्ट्स' में प्रकाशित अपने लेख में भारत द्वारा अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण हेतु वहाँ के बुनियादी ढांचे, संचार, शिक्षा, सामाजिक कल्याण संस्थाओं के निर्माण, पुलिस कूटनीतिज्ञों के प्रशिक्षण आदि अनेक क्षेत्रों में संचालित दीर्घ अवधि व लघु अवधि के विकास कार्यक्रमों के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है।

सतीश चन्द्रा (2011) ने "स्ट्रेटेजिक एनालिसिस" में प्रकाशित अपने लेख 'इण्डियाज ऑप्शन्स इन अफगानिस्तान' में अफगानिस्तान में तालिबान शासन की समाप्ति के बाद वहाँ भारत के लिए खुले विभिन्न विकल्पों पर विचार प्रस्तुत किए हैं। साथ ही अफगानिस्तान में भारत द्वारा एक स्थायी और मैत्रीपूर्ण सरकार की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु भारत द्वारा किए जा रहे प्रयासों और तालिबान व अन्य कारणों से भारत के लिए अफगानिस्तान में उत्पन्न विभिन्न संकटों पर भी प्रकाश डाला है।

शाहिदा मोहम्मद अब्दाली (2016) ने अपनी पुस्तक "अफगानिस्तान, पाकिस्तान एण्ड इण्डिया : ए पैराडाईम शिफ्ट" में भारत–पाकिस्तान रिश्तों के संदर्भ में अफगानिस्तान की भूमिका और वहाँ की पुनर्निर्माण प्रक्रिया में भारत के योगदान तथा वहाँ से NATO सेनाओं की वापसी के बाद की परिस्थितियों में भारत की उपस्थिति की प्रासंगिकता आदि विषयों का विवरण प्रस्तुत किया है।

कीर्त नाइर (2015) ने अपने शोध पत्र 'इण्डियाज रोल इन अफगानिस्तान पोस्ट 2014 स्ट्रेटेजी, पोलिसी एण्ड इम्पलीमेन्टेशन' में अफगानिस्तान के प्रति भारत की नीति व उसके कार्यान्वयन के सम्बन्ध में उठाए गए कदमों का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त लेखक द्वारा अफगानिस्तान में चीन, पाकिस्तान आदि शक्तियों के प्रभाव व उसके संदर्भ में भारत की रणनीति व भावी सम्भावनाओं पर भी प्रकाश डाला है।

बालचन्द्र श्रेष्ठा (2012) ने अपने शोध–पत्र "इण्डियाज रोल इन अफगानिस्तान : पास्ट रिलेशन्स एण्ड फ्यूचर प्रोस्पैक्ट्स" में भारत–अफगानिस्तान सम्बन्धों के इतिहास व भविष्य कालीन सम्बन्धों के विषय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है।

रीतिका शर्मा (2010) ने अपनी पुस्तक "इण्डिया एण्ड दी डायनामिक्स ऑफ वर्ल्ड पोलिटिक्स : ए बुक ऑन इण्डियन फोरेन पोलिसी" में भारत–अफगानिस्तान सम्बन्धों के विभिन्न पक्षों यथा – सामरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक,राजनीतिक, ऊर्जा आदि के संदर्भ में दोनों राष्ट्रों के मध्य विभिन्न समयों में सम्पन्न अनेक समझौतों का विवरण प्रस्तुत किया है।

विशाल चन्द्रा (2016) ने अपने लेख "इण्डिया इन दी अफगान मेज : सर्च फोर ऑप्शन्स" में अफगानिस्तान में गृहयुद्ध, विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप व भारत–अफगानिस्तान के रिश्तों में विभिन्न समयों पर आए उतार–चढ़ावों तथा वहाँ भारत हेतु विद्यमान अनेक विकल्पों के संदर्भ में विचार प्रस्तुत किए हैं।

फाहमिदा अशरफ (2007) ने अपने लेख "इण्डिया–अफगानिस्तान रिलेशन्स : पोस्ट 9/11" में अफगानिस्तान में तालिबानी शासन के दौरान व 9/11 की आतंकी घटना के बाद भारत–अफगानिस्तान सम्बन्धों के विभिन्न आयामों में आए परिवर्तनों का विवरण प्रस्तुत किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

'अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में भारत का योगदान' विषय पर लिखा गया यह शोध पत्र दक्षिण एशिया के बदलते हुए सुरक्षा हालातों में भारत की रणनीति की जाँच या मूल्यांकन करता है ताकि भारत, अफगानिस्तान में अपने हितों की रक्षा कर सके। इसके अतिरिक्त वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में अफगानिस्तान में अन्य शक्तियों की बढ़ती हुई भागीदारी को ध्यान में रखते हुए अफगानिस्तान के प्रति भारत की विदेश नीति में विद्यमान गुंजाईश को समझना भी अध्ययन का उद्देश्य है।

परिकल्पना

भारत के अफगानिस्तान के साथ अत्यधिक प्राचीन सम्बन्ध रहे हैं और दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्धों ने समय–समय पर कई उतार–चढ़ाव भी देखे हैं। लेकिन भारत ने सदैव स्वयं के और अंतर्राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अफगानिस्तान के साथ अपने सम्बन्धों को सुदृढ़ता प्रदान करने का प्रयास किया है। भारत अफगानिस्तान की पुनर्निर्माण प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण सहायता कर्ता राष्ट्र है। भारत ने अफगानिस्तान के प्रति मैत्री और सहयोग की नीति को अपनाकर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वयं की सकारात्मक छवि को सुदृढ़ता प्रदान की है। भारत अपने पड़ौसी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना करके और वहाँ शांत, सुरक्षित व प्रगतिशील वातावरण की रचना करके ही स्वयं को सुदृढ़ एवं प्रभावी रूप से विश्व परिदृश्य पर प्रस्तुत कर सकता है और विश्व की सर्वोच्च शक्ति बनने के अपने लक्ष्य की ओर तीव्रता से अग्रसर हो सकता है।

शोध प्रविधि

"अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में भारत का योगदान" विषय पर लिखा गया यह शोध पत्र सैद्धांतिक है व मूलतः द्वितीय सामग्री व सूचना स्रोतों पर आधारित है।

अफगानिस्तान के प्रति भारत की विदेश नीति

भारत व अफगानिस्तान के सम्बन्ध ऐतिहासिक है। दोनों देशों के सम्बन्धों में विभिन्न समयों पर अनेक अच्छे–बुरे दौर भी आते रहे हैं। अफगानिस्तान में तालिबान के शासन के दौरान दोनों राष्ट्रों के सम्बन्ध विशेष रूप से कमजोर हुए। लेकिन अफगानिस्तान में तालिबान शासन के अंत और वहाँ से 2014 के बाद NATO सेनाओं व अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहायता बल

(International Security Assistance Force - ISAF) की वापसी के बाद से भारत–अफगानिस्तान सम्बन्धों में घनिष्ठता आई है।

अफगानिस्तान के प्रति भारत की नीति यह रही है कि वहाँ आतंकवाद की समस्या का समाधान हो तथा एक स्थिर व प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना हो। एक स्थिर, शांत, लोकतांत्रिक व आर्थिक दृष्टि से प्रगतिशील अफगानिस्तान ही भारत के सामरिक हितों के अनुकूल है। सुरक्षा के अतिरिक्त अफगानिस्तान भारत के लिए इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि अफगानिस्तान में शांति व स्थिरता के बिना भारत मध्य एशिया के देशों के साथ अपनी साझेदारी को आगे नहीं बढ़ा सकता है। अफगानिस्तान भारत व मध्य एशिया के बीच एक कड़ी की तरह है। इस दृष्टि से भारत अफगानिस्तान में महत्त्वपूर्ण विकास साझेदारी निभाने की प्रक्रिया को अपना चुका है। अफगानिस्तान की वस्तुस्थिति को ध्यान में रखते हुए भारत ने अफगानिस्तान में राजनीतिक प्रक्रिया व सैन्य क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से प्रभावशाली भूमिका ना निभाकर अफगानिस्तान के आर्थिक एवं सामाजिक पुनर्निर्माण तक स्वयं को सीमित रखा है। अफगानिस्तान की जनता व सरकार भारत की इस भूमिका के समर्थक हैं, परन्तु चीन, पाकिस्तान व तालिबान भारत के अफगानिस्तान में किसी भी प्रकार के योगदान के विरोधी हैं।

अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में भारत का योगदान

अफगानिस्तान में तालिबानी युग के अन्त के बाद भारत ने अपने इस पड़ौसी राष्ट्र के पुनर्निर्माण एवं पुनर्वास की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। भारत द्वारा अफगानिस्तान में लगभग 2 अरब से अधिक धनराशि के व्यापक विकास सहायता कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। जो एक शांत, स्थायी, प्रगतिशील और समृद्धिशाली अफगानिस्तान के निर्माण की भारत की प्रतिबद्धता काएक प्रतीक है। अफगानिस्तान में विशेष रूप से बुनियादी ढांचे के निर्माण, लोकतंत्र के सुदृढ़ीकरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, दूर–संचार, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यापार, खनन आदि विभिन्न क्षेत्रों में विकास हेतु भारत द्वारा निरंतर सहयोग दिया जा रहा है। भारत ने अफगानिस्तान में अनक लघु, मध्यम तथा विशाल बुनियादी संरचना परियोजनाओं के संचालन का निर्णय लिया है। इसमें जारांज से डेलाराम तक 218 किमी. की सड़क का निर्माण ताकि अफगानिस्तान से ईरानी सीमा के लिए माल और सेवाओं की आवा–जाही को सुविधाजनक बनाया जा सके, 600 किमी. लम्बे बामियान–हेरात रेल लिंग का निर्माण जिसका उद्देश्य हाजीगक की खानों को हेरात से जोड़ना था, पुल–ए–खुमरी से काबुल तक 220 केवी डीसी ट्रांसमिशन लाईन का निर्माण और चीमताला में 220/110/20 केवी के सब–स्टेशन का निर्माण, अफगानिस्तान के विभिन्न प्रांतों में टेलीफोन एक्सचेंज का उन्नयन, काबुल में Uplink प्रदान करके राष्ट्रीय टी.वी. नेटवर्क का विस्तार ताकि राष्ट्रीय एकीकरण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके, आदि कार्य शामिल हैं।

सार्वजनिक और निजी भारतीय कम्पनियों के संघ का गठन किया गया ताकि अफगानिस्तान में विशेषतः खनन के क्षेत्र में निवेश को आकर्षित किया जा सके। अफगानिस्तान में वर्तमान में संचालित या कुछ पूर्ण हो चुके अन्य भारतीय कार्यक्रम निम्न हैं – अफगान संसद की नई ईमारत का निर्माण, जो अफगानिस्तान में लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। इसका निर्माण कार्य 2005 में प्रारम्भ हुआ और इसका उद्घाटन 25 दिसम्बर, 2015 को अफगानिस्तान के राष्ट्रपति डॉ. अशरफ घानी और भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया। सलमा डैम का निर्माण (इसके निर्माण से अफगानिस्तान के हेरात के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के विद्युतीकरण और लगभग 80,000 हैक्टेयर कृषि क्षेत्र की सिंचाई में सहायता प्राप्त होगी), दाशी और चरीकार सब स्टेशन का निर्माण, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ चाईल्ड हैल्थ में विकेन्द्रित अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली (Decentralized Waste Water Treatment System) और नैदानिक केन्द्र (Diagnostic Centre) की स्थापना, कंधार में अफगान राष्ट्रीय कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (Afghan National Agriculture Science and Technology University) की स्थापना, अफगानिस्तान को भारत द्वारा विशाला मात्रा में गेहूं की आपूर्ति, प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों को खाद्य सहायता (प्रतिदिन अफगानिस्तान के विभिन्न प्रांतों के लाखों बच्चों के मध्य उच्च प्रोटीन युक्त बिस्कुट का वितरण), विद्यालयों का निर्माण व पुनर्वास (हबीबा हाई स्कूल के लिए 1 मिलियन अमरीकी डॉलर का अनुदान), बाग–ए–जनाना में महिलाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना ताकि अफगानिस्तान की महिलाओं को कृषि, पशुपालन, वस्त्र निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण, व्यापार आदि क्षेत्रों के संदर्भ में प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके, भारतीय चिकित्सा मिशन के अंतर्गत हेरात, जलालाबाद, मजार–ए–शरीफ, कंधार, काबुल आदि अनेक स्थानों पर चिकित्सालयों का निर्माण। भारत ने काबुल में परिवहन व्यवस्था में सुधार हेतु भी पर्याप्त योगदान दिया और इस संदर्भ में अफगानिस्तान को 1000 बसों का दान करने का निश्चय किया। भारत के व्यापारियों द्वारा भी अफगानिस्तान के खनन, कृषि, सौर ऊर्जा, सूचना एवं तकनीक, संचार आदि क्षेत्रों में निरंतर निवेश किया जा रहा है। दोनों देशों के मध्य 2011 में सामरिक भागीदारी समझौता (The Strategic Partnership Agreement) भी सम्पन्न हुआ जिसका उद्देश्य भारत द्वारा अफगानिस्तान राष्ट्रीय सुरक्षा बल (Afghan National Security Force - ANSF) के लिए प्रशिक्षण व उपकरण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम चलाना था। इसके अतिरिक्त भारत की अनेक उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा भी अफगान विद्यार्थियों हेतु भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शिक्षण हेतु छात्रवृत्तियों की भी व्यवस्था की गयी है। इस प्रकार के समस्त प्रयासों ने दोनों राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों को मजबूती प्रदान की है।

निष्कर्ष

भारत और अफगानिस्तान के मध्य मजबूत ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं। अफगानिस्तान में शांति व स्थायित्व की स्थापना भारत की सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अतः भारत द्वारा अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण व विकास प्रक्रिया में

निरंतर सहायता प्रदान करने की नीति को लागू किया गया। भारत ने विभिन्न प्रयासों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समुदायों को भी अफगानिस्तान में शांति, स्थायित्व, निवेश व विकास प्रक्रिया में सहयोग देने हेतु प्रोत्साहित किया। अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण व विकास में भारत के प्रभावशाली योगदान के कारण भारत को चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान के कट्टरवादी इस्लामिक तत्त्वों तथा अन्य विदेशी शक्तियों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विरोध का सामना करना पड़ता है।

यद्यपि अफगानिस्तान में पाकिस्तान की तुलना में भारत के योगदान या भूमिका को अफगानिस्तान का अधिक जन समर्थन प्राप्त है, तथापि इस क्षेत्र में कट्टरवादी इस्लामिक ताकतों और पाकिस्तान के निरन्तर बढ़ते प्रभुत्व के कारण भारत के लिए गम्भीर संकट उत्पन्न हो सकता है। अतः भारत द्वारा अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण तथा विकास के साथ ही उनकी सैन्य क्षमताओं के सुदृढ़ीकरण हेतु निरन्तर सहायता की नीति को लागू रखा जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अरूण सहगल : अफगानिस्तान – ए रोल फॉर इण्डिया, के.डब्ल्यू. पब्लिशर, नई दिल्ली,2011,पृ. 5–8*
2. *अरविन्द गुप्ता : इण्डियाज लिमिटेड ऑप्शन्स इन अफगानिस्तान, आई.डी.एस.ए. (नई दिल्ली), वोल्यूम–51, नं. 2, 2011, पृ. 6–8*
3. *आर्मस्ट्रोंग एन्ड्रीआ : रीजनल इश्यू इन दी रिकन्सट्रक्शन ऑफ अफगानिस्तान, वर्ल्ड पॉलिसी (यूएसए), वोल्यूम–20, नं. 1, 2003, पृ. 3*
4. *अशरफ फाहमिदा : इण्डिया–अफगानिस्तान रिलेशन्स पोस्ट 9/11, स्ट्रेटेजिक एनालिसिस (इस्लामाबाद), वोल्यूम–27, नं. 2, 2002, पृ. 11*
5. *बालचन्द्र श्रेष्ठा : इण्डियाज रोल इन अफगानिस्तान : पास्ट रिलेशन्स एण्ड फ्यूचर प्रोस्पैक्ट्स, एशिया पैसिफिक, 2011, पृ. 5*
6. *क्रिस्टीन सी. फेयर : इण्डियाज गेम इन अफगानिस्तान, दी वाशिंगटन क्वार्टरली, वोल्यूम–34, नं. 2, 2011, पृ. 5*
7. *डी. सुबा चान्दन : प्लान बी फॉर इण्डिया इन अफगानिस्तान लैट पाकिस्तान रिमेन एनट्रेप्टेड, ट्रिब्यून, 2011, पृ. 1*
8. *जयश्री बजोरिआ : इण्डिया–अफगानिस्तान रिलेशन्स, कौंसिल ऑन फोरेन रिलेशन्स (न्यूयॉर्क), वोल्यूम–22, नं. 3, 2009, पृ. 7–8*
9. *कीर्त नोइर : इण्डियाज रोल इन अफगानिस्तान पोस्ट 2014 स्ट्रेटेजी, पॉलिसी एण्ड इम्पलीमेन्टेशन, के. डब्ल्यू. पब्लिशर, नई दिल्ली, नं. 55, 2015, पृ. 8*
10. *मेरियट डिसूजा : इण्डियाज ऐड टू अफगानिस्तान : चैलेन्जेज एण्ड प्रोस्पैक्ट्स, आई.डी.एस.ए., नई दिल्ली, वोल्यूम–31, नं. 5, 2007, पृ. 9–10*
11. *राहुल बेदी : इण्डिया एण्ड सेन्ट्रल एशिया, फ्रंटलाईन (चेन्नई), वोल्यूम–19, नं. 19, सितम्बर, 2002, पृ. 16*
12. *आर.वी. राईस : अफगानिस्तान एण्ड दी रीजनल पॉवर्स, एशियन सर्वे (यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया), वोल्यूम–33, नं. 9, 1993, पृ. 13*
13. *शाहिदा मोहम्मद अब्दाली : अफगानिस्तान, पाकिस्तान एण्ड इण्डिया : ए पैराडाईम शिफ्ट, पेन्टागन प्रेस, 2016, पृ. 3–4*
14. *सतीश चन्द्राः इण्डियाज ऑप्शन्स इन अफगानिस्तान, आई.डी.एस.ए. (नई दिल्ली), वोल्यूम– 35, नं. 4, 2011, पृ. 6–7*
15. *विशाल चन्द्रा : इण्डिया इन दी अफगान मेजर सर्च फोर ऑप्शन्स, आई.डी.एस.ए. (नई दिल्ली), वोल्यूम–36, नं. 1, 2016, पृ. 3*

वेबसाईट्स

1. *www.google.com*
2. *www.wikipedia.org*
3. *www.mea.gov.in*
4. *www.idsa.in*
5. *www.ipcs.org*
6. *www.researchpublish.com*